13 शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो कहाँ, कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिंधु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से;
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की
बँधा मूढ़ बंधन में।

सच पूछो, तो शर में ही
वसती है दीप्ति विनय की,
संधि-वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को
तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

WEBCOPY, NOT TO BE REPUBLISHED

शब्दार्थ

रिपु– शत्रु, दुश्मन
अनुनय–प्रार्थना, विनय
विनत–विनीत, नम्र, झुका हुआ
पौरुष–पुरुष का कर्म
भुजंग–साँप
शर–बाण, तीर, बरछी
गरल– विष, जहर
दर्प–घमंड, अभिमान
विनीत–नम्र
नाद–आवाज़, शब्द

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता के माध्यम से हमें क्या सीख मिलती है?
2. वे कौन-सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने राम को धनुष उठाने पर बाध्य किया?

3. **निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-**

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।

पाठ से आगे

1. दिनकर के इस भाव से आप कहाँ तक सहमत है कि समाज शक्तिशाली की ही पूजा करता है? अभावहीन, निर्बल व्यक्ति को समाज में कोई नहीं पूछता। इन पर आप अपना विचार-स्पष्ट कीजिए।
2. सुयोधन को नर-व्याघ्र क्यों कहा गया है?

व्याकरण

1. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए -**

भुजंग
रघुपति
सिंधु
शर
कायर
नि[illegible]

गतिविधि

1. दिनकर के जीवन से संबंधित कुछ जानकारियाँ इकट्ठी कीजिए तथा उनके जन्म दिन पर अपने स्कूल में जयन्ति मनाइए।
2. दिनकर की अन्य रचनाओं का संकलन कर कक्षा में सुनाइए।
3. इस कविता को सुंदर हस्तलेख तथा बड़े अक्षरों में लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

BSEB © WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED